गांधी मार्ग की विश्वव्यापकता

डा0 जितेन्द्र कुमार पाण्डेय*

सारांश

महात्मा गांधी महान भारतीय थे, वे पहले थे, जो भारत को वैश्विक मानचित्र पर लाए। तमाम आधुनिक राजनेताओं और राजनीतिज्ञों के बीच वे सबसे प्रामाणिक वैश्विक व्यक्तित्व दिखते हैं। उनका जीवन तीन महाद्वीपों से होकर गुजरा है इसलिए हमें गांधी को उनके अपने प्रयोग के आलोक में देखना चाहिए। उन्होंने दुनिया के इतिहास में सबसे ज्यादा हिंसक सदियों में से विरोध के एक ऐसे अस्त्र का अविष्कार किया जो अहिंसा पर आधारित था। उनके राजनीतिक विचार जैसे–जैसे विकसित होते गये उनका खुद में एक नेता और मनुष्य निर्माता के रूप में भरोसा बढ़ता गया। उनकी महत्ता या उनके संदेश उस समय की तुलना में आज अधिक प्रासंगिक लगते हैं जितना वे उस समय लग सकते थे जब उन्हें बोला या रचा गया था। गांधी के वैश्विक महत्व का पता प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होने वाली उन पुस्तकों से चलता है, जो उनके व्यक्तित्व और उनके विचार पर प्रकाशित की जाती हैं।

मुख्य शब्द– सत्याग्रह, अन्तर्राष्ट्रीय, अहिंसा दिवस, आधुनिक सभ्यता, पर्यावरण एवं विकास, दार्शिनकता, स्वदेशी, स्वराज, शान्ति, वैकल्पिक मॉडल, इन्द्र स्वराज।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी (1869–1948) एक राजनैतिक कार्यकर्ता और व्यावहारिक दार्शनिक थे, उनकी दार्शनिकता समस्याओं को तुरन्त दूर करने की भावना से प्रेरित और निर्देशित थी, गांधी ने अपनी ओर से जो सरल उपदेश दिये थे, उनके उद्‌देश्य, नीतियाँ और सिद्धान्त सब उनके कार्यक्रमों और कार्यों का ही एक हिस्सा थे। उनका कहना था कि उनका उनका जीवन उनका संदेश है और उन्हें किसी एक विशेष कार्य अथवा लेख के आधार पर परखा नहीं जा सकता।[1] उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह को अपूर्व व्यापकता दी एवं अच्छाई को सुदूर तक जा सकने वाले मूल्य के रूप में रूपायित किया। आज द्वंद्वों और संघर्षों से जूझ रही मानवता विश्व शांति और सद्‌भाव के लिए गाँधीवाद की ओर देख रही है। मानवता के इस महान व्यक्तित्व को 20वीं सदी का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति घोषित होना तथा उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय गांधी जी और उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।[2]

यूरोपीय संसद द्वारा जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि आधारभूत मानवाधिकारों के सम्मान, पालन और प्रोत्साहन के लिए गांधीवादी मूल्य एवं विचार सबसे अधिक उपयुक्त है। अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा भी अनेक अवसरों पर महात्मा गांधी के दर्शन को जीवन में स्थापित करने पर बल दे चुके हैं। आज उनकी प्रासंगिकता ही है कि विश्व के दो सबसे बड़े गांधीवादी न भारतीय हैं और न हिन्दू।

आधुनिक उपभोक्तावादी सभ्यता की आलोचना और स्वदेशी एक वैकल्पिक मॉडल के रूप में –

गाँधी जी ने आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की आलोचना करते हुए स्वदेशी को एक वैकल्पिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया तथा इच्छाओं को संयमित करने के लिए उपभोग की एक नैतिकता विकसित करने पर बल दिया।[3] उनकी रचना 'हिंद स्वराज' विश्व की महानतम पुस्तकों में से एक है। यह एक ऐसी पुस्तक है जो न केवल समाजिक व्यवस्थाओं के अर्न्तविरोधों एवं गहरी खामियों की समीक्षा प्रस्तुत करती है, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था का विकल्प प्रस्तुत करती है, जो आज की हिंसक और असत्य पर आधारित व्यवस्था के बरबस एक सत्याग्रही व्यवस्था हो।[4]

गांधी जी ने एक ऐसी व्यवस्था की, वकालत की जो सबकी पहुँच में थी, लघुस्तरीय अनुप्रयोगों के सर्वथा उपयुक्त थी और मनुष्य की रचनात्मकता की आवश्यकता से मेल खाती थी। आर्थिक दृष्टिकोण से स्थायित्व बुद्धिमानी की केन्द्रीय अवधारणा है और स्थायित्व का अर्थशास्त्र, विज्ञान और तकनीकी के गंभीर पुनरूद्धार को ध्वनित करता है। यह पुनरूद्धार सुव्यवस्थित, कोमल, अहिंसक, रमणीय एवं सुन्दर होता है।

गांधी जी की नैतिक साधना संबंधी प्रथम इच्छा जीवन की पवित्रता पर बल देना था। हर तरह के जीवन का सम्मान होना चाहिए, चाहे यह पेड़–पौधों का या गाय का ही जीवन क्यों न हो। जीवन के प्रत्येक रूपों के प्रति उनका प्रेम, वैष्णव आदर्श ''वासुदेवं सर्वाभिदम्'' (यह सब ईश्वर ही हैं) का पालन करने का प्रयत्न था।[5]

* सहायक प्रोफेसर, गवर्न्मेन्ट पी0जी0 कॉलेज, मगरहां, मीरजापुर, वाराणसी–221106

गांधी जी का प्रमुख उद्देश्य आधुनिक सभ्यता की भर्त्सना मात्र करना नही था अपितु सही संदर्भों में सभ्यता की रूपरेखा प्रस्तुत करना, समीक्षा करना और इसकी प्राप्ति हेतु एक वैकल्पिक मार्ग सुझाना भी था। इसी के अनुरूप तर्क देते हुए उन्होंने कहा कि आज, ''सभ्यता की सही परख इस तथ्य से होगी कि क्या इसमें रहने वाले लोग शारीरिक (भौतिक) कल्याण को अपना उद्देश्य बनाते हैं?'' उत्पादन बहुलता, स्तरीयकरण, मानव मशीनीकरण (रोबोटिज्म), शहरीकरण अधिक से अधिक प्राप्त करने की कृत्रिम इच्छा से समर्पित माँगों की गति और अधिकता ये सब आधुनिक सभ्यता के चिन्ह (प्रतीक) हैं। गांधी जी ने तर्क दिया, ''यदि मैं मौजमस्ती वाले कार्यों के विरूद्ध बोलता हूँ और पुरूषों एवं नारियों, को साधारण जीवन अपनाने को कहता हूँ जिसका प्रतीक चर्खा है तो मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ कि मुझे ज्ञात है कि बुद्धिमत्ता पूर्ण ढ़ग से सादगी की ओर लौटे बिना एक पशु से भी निम्नतर (पतनशील) जीवन से बच पाना मुश्किल होगा।''[6]

व्यावहारिक आदर्शवादी गांधीजी ने मशीनरी का महत्व स्वीकार किया और कहा, ''इसे रहना चाहिए।'' वे मशीन में ऐसे सभी सुधारों से संबंधित सुझावों का स्वागत करते थे जो लाखों लोगों के बोझ को हल्का कर सके। गांधी जी ने नैतिक परिदृश्य को उनकी विश्वदृष्टि से अलग हटकर नहीं समझा जा सकता। वैश्विक मूल्यों संबंधी मान्यता उनमें बहुत गहराई से समाई हुई है। अपनी पुस्तक ट्रेडीशन, टायरनी एण्ड यूटोपियाज में वे बलपूर्वक कहते हैं कि ''सभ्यता संस्कृति की पारम्परिक सीमाओं को काटती है। उनकी विश्वदृष्टि में पूर्व और पश्चिम निरंतर मिले हुए हैं। गांधी जी पाश्चात्य संस्कृति के विरूद्ध नहीं थे, आधुनिकता के विरूद्ध थे। अपनी इस समीक्षा में उन्होंने तर्क के आधुनिक अधिमानों को अस्वीकार कर दिया।''[7]

गांधी जी की पुस्तक हिन्द स्वराज में आधुनिक सभ्यता के उपर सख्त टिप्पणी की गई है और आधुनिकता को शैतानियत की संज्ञा दी गई है। गांधी जी का विश्व दृष्टिकोण विकास का एक उचित विकल्प प्रस्तुत करती है न कि एक समीक्षा। यह एक ऐसा विकल्प है जिसमें सांस्कृतिक पुनरूद्धार पर्यावरणीय संतुलन, समानुपाति न्याय और आर्थिक प्रगति के बीज अन्तर्निहित होंगें। गांधी जी की मान्यता थी की वर्तमान सभ्यता में जिस प्रकार की राजनीति एवं अर्थनीति है उसमे भय और लालच मुख्य है। उन्होने विकास के सन्दर्भ में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने तथा पर्यावरण की कीमत पर होने वाले विकास का विरोध किया, उन्होने कहा कि ''विश्व में इतना संसाधन है कि लोगो की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है लेकिन इतना संसाधन नहीं है कि लोगो के लालच को पूरा किया जा सके।'' गांधीजी पाश्चात्य सभ्यता को अंधे युग का प्रतीक मानते थे, क्योंकि पश्चिमी सभ्यता अधिकाधिक उपभोग पर आधारित है, जो नैतिक दिवालियापन का शिकार है जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाता है।

गाँधी ने दो कारणों से पश्चिमी सभ्यता को अस्वीकार किया। पहला इसका आधार असमानता पर टिका था और दूसरा यह व्यक्ति को अमानवीय और गैर–व्यक्तिवादी दृष्टि से देखता था। रूसो की तरह ही उन्होंने आधुनिक प्रौद्योगिकी और औद्योगीकरण को स्वीकार किया क्योंकि इनसे गरीबी और असमानता फैल रही थी। उन्होंने इटली का उदाहरण स्वीकार कर हिन्द स्वराज में वैकल्पिक मॉडल सुझाया।[8]

गाँधी वास्तविक आजादी के लिए आजादी की इच्छा को महत्वपूर्ण मानते थे। और इसके लिए वे कामकाजी वर्ग और गरीब का आजाद होना ज्यादा जरूरी समझते थे। पश्चिमी प्रौद्योगिकी और इसका अनुसरण करने वाली जीवन–शैली भारतीय परम्पराओं से अलग थी। यह भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने में भी अपर्याप्त थी और यह व्यक्तिगत रूप से भारतीय जनता के अर्थपूर्ण और वास्तविक विकास के लिए बाधक थी। वास्तव में आत्मनिर्भर गाँवों और समुदाय से एक आदर्श राज्य बनता है जिसका आधार सत्य और अहिंसा पर टिका होता है। गाँधी जी एक ऐसा आजाद भारत चाहते थे जो पश्चिम की नकल से न बना हो। इसका अर्थ था कि वे मशीनरी, आने–जाने के आधुनिक साधनों, आधुनिक इलाज एवं दवाई और मशीन से बुने गए कपड़ों का इस्तेमाल नहीं करना चाहते थे।

उन्होंने ''हिन्द स्वराज'' में अपने इस प्रारंभिक तर्क का जिक्र किया है।

(क) व्यक्ति की भलाई सभी व्यक्तियों की भलाई होती है।

(ख) काम करके जीवनयापन करने के अधिकार की दृष्टि से वकील का काम एक नाई के काम के समान ही मूल्य रखता है।

(ग) एक मजदूर का जीवन यानी मिट्टी का काम करने वाले और शिल्पकार का जीवन श्रेष्ठ जीवन है।

गाँधी के विचारों के मुख्य पहलुओं में एक था स्वदेशी। गाँधी ने इसका इस्तेमाल लोगों की सोच को प्रज्वलित करने के लिए किया, ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें।

गांधी जी की दृढ़ आस्था थी कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। गाँवो में बसने वाले भारतीयों के लिए आत्मनिर्भर एवं ग्राम स्वराज की प्राथमिक आवश्यकता है। कई अवसरों पर गांधी ने स्पष्ट किया कि वे मशीन और विज्ञान के

खिलाफ नहीं है। गांधीजी पाश्चात्य संस्कृति के विरूद्ध नही, वरन् आधुनिकता के विरूद्ध थे। उन्होंने पश्चिम के आधुनिक वैज्ञानिक तत्व की प्रशंसा की किन्तु एक विशिष्ट त्रुटि मानवता और विज्ञान के नाम पर इस धरती पर रहने वाले कमजोर वर्गों का शोषण और विनाश है।

गांधी जी ने मानवजाति को चेतावनी देते हुए इस पागलपन भरी इच्छा से दूर रहने के लिए कहा जो मनुष्य की पाश्विक इच्छा की पूर्ति हेतु पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुंचाती है।[9] उनका उद्देश्य आधुनिक तकनीकी सभ्यता द्वारा मानव जाति के आंतरिक अंतर्विरोधों में उत्पन्न दुविधाओं से व्यक्ति को मुक्ति दिलाना था, लालसा के स्थान पर आवश्यकता को विकास का मानक बनाना था। उन्होने हिंसा, शोषण और भौतिकवाद पर आधारित विश्व व्यवस्था के पतन की भी भविष्यवाणी की और उसके स्थान पर एक अहिंसक सहकारी एवं आध्यात्मिक व्यवस्था का विकल्प सुझाया जिसमें विज्ञान और अध्यात्म केवल साथ ही नहीं रहेगे बल्कि परस्पर एक दूसरे को समृद्ध भी करेंगे।

गांधी जी के व्यक्तित्व की यह खास बात थी कि उन्होंने एक साथ विकास के पश्चिमी मॉडल को चुनौती दी और जनता को उपनिवेशवाद के खिलाफ गोलबंद भी किया। यह मानवीय आजादी के साथ वैकल्पिक मॉडल का अद्भुत समन्वय था। उन्होनें उपभोक्तावाद के दुश्चक्र से निकलने के लिए वैकल्पिक जीवन शैली अपनाने तथा आमदनी और संपत्ति की न्यूनतम और अधिकतम सीमाएँ निर्धारित करने और स्वदेशी को अभिन्न अंग के रूप में अपनाये जाने की आवश्यकता पर बल दिया।[10] गांधी जी की स्वदेशी भावना कोई संकीर्ण राष्ट्रवादी सोच की उत्पत्ति नहीं है, बल्कि देश के आर्थिक विकास और कुशल कारीगरों व श्रमिकों के रोजगार से जुड़ी हुई थी। इसी दृष्टि पर जोर देते हुए उन्होने खादी और चरखा आंदोलन चलाया। साथ ही गांधीजी लघु और कुटीर उद्योगों के पक्षधर थे। वे कहते थे कि मनुष्य को मशीन का गुलाम नहीं होना चाहिए। मशीनों का वे इसलिए विरोध करते थे क्योंकि उनसे जितने लोगों को काम मिलता है उससे कई गुना कारीगर बेकार हो जाते हैं।

गांधी जी ने कहा– ''सामूहिक उत्पादन में लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में नहीं रखा जाता। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यह विश्व के संकट के लिए जिम्मेदार है।'' आज जिस गति से उपभोक्तावाद और संग्रह की संस्कृति बढ़ रही है और अमरीका तथा यूरोप के विकसित देशों समेत समूचे विश्व में आर्थिक मंदी तथा बेरोजगारी बढ़ रही है, उसे देखते हुए गांधी जी की चेतावनी ठीक लगती है। यह सही है कि आज के युग में औद्योगीकरण के बिना विकास तथा प्रगति कर पाना कठिन है किंतु यदि गांधीजी के सिद्वान्त पर चलकर हम छोटे, कुटीर तथा ग्रामीण उद्योगों के विकास पर अधिक ध्यान देते तो बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, शोषण और उपभोक्तावाद जैसी समस्याएं इतना विकराल रूप न ले पाती।[11]

गांधी जी के स्वराज की मूल भारतीय कल्पना सत्य, अहिंसा, और नैतिकता को प्रमुख स्थान देती हैं। वे लिखते हैं, 'मेरी कल्पना का स्वराज तभी आयेगा जब हमारे मन में यह बात अच्छी तरह जम जाए कि हमें अपना स्वराज सत्य और अहिंसा के शुद्ध साधनों द्वारा ही हासिल करना है।

सत्याग्रह और अहिंसा –

गांधी सत्याग्रह के पालनकर्ता और सिद्धान्तकार दोनों ही थे। उन्होंने बारीक तरीके से अपने अभियान की योजना बनायी। किस कानून को कब, कहाँ और किसके द्वारा तोड़ना है। इस पर उन्होंने काफी ध्यान दिया और इसके लिए संक्षिप्त निर्देश जारी किये। पत्रों, भाषणों, लेखों और हिन्द स्वराज में उन्होंने इस बात की व्याख्या की कि क्यों अहिंसक का आंदोलन उन सशस्त्र आंदोलनों से ज्यादा प्रभावी और ज्यादा बेहतर है।[12] सत्याग्रह और अहिंसा का सिद्वान्त मानव जाति को गांधी का सबसे महत्वपूर्ण उपहार है, उन्होंने दमन एवं प्रतिकार के अहिंसात्मक तरीके से दुनिया को परिचित कराया है।[13]

सत्याग्रह विचारों की ऐसी श्रृंखला है जो कई चरणों में मानवीय संघर्ष को हिंसात्मक होने से रोकता है एवं संघर्ष के मूल कारणों का विश्लेषण कर संघर्षहीन एवं समतामूलक समाज बनाने का प्रयास करता है। वस्तुतः सत्याग्रह ही सामाजिक क्रांति एवं सामाजिक कल्याण का गांधीवादी तरीका है।

सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह या सत्य पर टिके रहना या अपने विचार एवं कार्यो में सत्यवादी होना। परन्तु एक संकल्पना के रूप में सत्याग्रह अहिंसा और शांतिपूर्वक सत्य का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। गांधी जी ने अहिंसा और सत्य के अनुसरण के द्वारा सामाजिक परिवर्तन की अचूक तकनीक को विकसित किया है जिसका उद्देश्य समाज में विद्यमान वर्तमान बुराईयों को दूर कर एक नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना है। एक ऐसी व्यवस्था जिसमें समानता के लिए न तो राजनीतिक उत्पीड़न की जरूरत होगी और न ही स्वतन्त्रता के लिए आर्थिक शोषण की आवश्यकता।

एक सत्याग्राही समाज में न तो शोषण का स्थान है, न दमन का। स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारा तीनों सत्याग्रही समाज में एक साथ क्रियान्वित हो सकते हैं। सत्य, अहिंसा एवं कष्ट सहना इन तीनों सिद्वान्तों से मिलकर सत्याग्रह का निर्माण होता है। गांधीवादी विचार में केन्द्रीय सरोकार स्वतन्त्रता का है, जिसे गांधी स्वराज का नाम देते हैं और उसे चेतना का स्वराज कहते हैं। इस स्वराज की प्रक्रिया का आधार 'आत्मबल' है, जिसका व्यावहारिक रूप गांधी जी अहिंसा के व्यवहार में देखते हैं।[14]

अहिंसा व्यैक्तिक व्यवहार में हीं नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था की प्रक्रिया और कसौटी के रूप में भी है। हिन्द स्वराज एक सत्याग्राही व्यक्ति और सत्याग्रही समाज का संकल्प है। सत्याग्रह अपने ''रचनात्मक'' और ''प्रतिरोधात्मक'' दोनो ही अर्थों में है। गांधी जी के सत्याग्रह का दर्शन व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्ष दोनो के लिए समान है। यह एक साथ दो उद्देश्यों की पूर्ति करता है – पहला चरित्र निर्माण और दूसरा राष्ट्र निर्माण। इसका अर्थ है रचनात्मक कार्य और सविनय अवज्ञा के विवेकपूर्ण सामंजस्य द्वारा समाज में अच्छाइयों को प्रोत्साहित कर 'स्वराज' प्राप्त करना और यह भी दर्शाना कि वैश्विक भाइचारे में समुदाय प्रधान होता है, न कि सत्ता और राज्य।[15]

महात्मा गांधी के जीवन में दो मूल्यों के प्रति सबसे अधिक आग्रह और निष्ठा है। ये दो मूल्य हैं सत्य और अहिंसा। कहने के लिए ये दो हैं लेकिन वास्तव में उनके लिए ये एक ही मूल्य के दो पहलू थे। जो व्यक्ति सत्य पर टिका है वह अनिवार्यतः अहिंसक होगा, यह उनका मूल विश्वास था। धैर्य और संतोष ने 1919–1921 के बीच रचित गांधीनामा में लिखा था– ''लश्कर–ए–गांधी को हथियारों की कुछ हाजत नहीं, हाँ मगर बेइंतिहा सब्र–औ–कनाअत चाहिए'' यानी गांधी की सेना को हथियारों की जरूरत नहीं है। उसे जरूरत है तो सिर्फ सब्र और संतोष की। जीवन भर गांधी ने ब्रिटिश शासन के साथ इन्हीं हथियारों के सहारे संघर्ष किया और अतंतः उसे परास्त किया। गांधी आस्तिक थे और ईश्वर की सत्ता में उनकी गहरी आस्था थी। उनके लिए ईश्वर का ही दूसरा नाम सत्य था और अहिंसा सत्य का दूसरा पहलू थी। सत्य और अहिंसा उनके लिए एकाकार हो गए थे। अहिंसा का अर्थ केवल दूसरों के प्रति हिंसा का प्रयोग न करना ही नहीं था। इसका अर्थ मन और आत्मा को अपने विरोधी के प्रति घृणा और द्वेष से पूरी तरह शुद्ध करना भी था। यदि मन, वचन और कर्म में एकरूपता न हुई और किसी एक में भी द्वेष या घृणा बची रह गई, तो उसे अहिंसा नहीं कहा जा सकता।

सत्य और अहिंसा के मूल्य महात्मा गांधी की मौलिक खोज नहीं थे। भारतीय चिंतन परम्परा में ये मूल्य चिर काल से प्रतिष्ठित और स्वीकृत रहे हैं। गांधी की महानता इस बात में थी कि इन निजी जीवन–मूल्यों का उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक प्रतिरोध के सार्वजनिक मूल्यों के रूप में पुनराविष्कार किया और अजेय माने जाने वाले ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने के लिए उनका उपयोग किया। सत्य और अहिंसा के प्रति उनकी आस्था इतनी गहरी थी कि यदि उनकी कीमत पर देश की आजादी प्राप्त होती हो, तो वे आजादी भी त्यागने के लिए तैयार थे।[16] सत्य और अहिंसा के इन जुड़वां मूल्यों को वे आत्मशुद्धि के लिए भी प्रयोग में लाते थे और उनका गहरा विश्वास था कि जब तक नागरिकों की आत्मशुद्धि नहीं होगी, लोकतंत्र अपने सही अर्थों में स्थापित नहीं हो सकता।

गांधी ने स्वतन्त्रता संघर्ष की दीर्घकालीन गतिशीलता के लिए जो मार्ग अपनाया वह सत्याग्रह और अहिंसा का ही है। गांधी जी के लिए अहिंसा मानव के सर्वोच्च साध्य एवं ईश्वर की उपलब्धि का एक मात्र साधन है, अहिंसा ईश्वर का मूल चरित्र है जिसको अपने भीतर पैदा करके ही मनुष्य ईश्वर की अनुभूति कर सकता है। जब तक मानवीय स्वभाव पूर्णतया अहिंसक नहीं होगा तब तक उसमें ईश्वरीय प्रकाश का प्रस्फुटन नहीं हो सकता है। गांधी जी ने कहा ''अहिंसा मेरा धर्म और सत्य मेरा ईश्वर है। हिंसा कायरता की पराकाष्ठा है और अहिंसा निडरो का हथियार है। गांधी के लिए अनशन शुद्ध रूप में सत्याग्रह, सत्य की ताकत यानी सविनय अवज्ञा थाः उनके लिए आत्मत्याग ही ''सच्ची प्रार्थना'' थी। ''शरीर का बलिदान देकर सत्याग्रही अपनी आत्मा को मुक्त कर देता है।'' देश की आजादी की लड़ाई भी शरीर और आत्मा का संघर्ष थी और गांधी जब भी 'आमरण अनशन' पर बैठते थे वह उसे नैतिकता की दूसरी ऊंचाई पर ले जाते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन में गैर–गांधीवादी सुभाष चंद्र बोस ने सिर्फ हथियार उठाने की ही बात नहीं कही। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान गिरफ्तार किए गये बोस ने जेल की कोठरी में अपना आमरण अनशन शुरू करने से पहले बंगाल के गर्वनर को लिखा, ''इस नश्वर दुनिया में हर चीज का अंत होता है और होता रहेगा लेकिन विचार, आदर्श और सपने खत्म नहीं होते।17

पीड़ा और बलिदान – अनशन को बयान करने के लिए ये प्रमुख शब्द हैं। बोस ने कहा, ''कोई भी पीड़ा और बलिदान से हार नहीं जाता।'' कम से कम वे खुद और गांधी नहीं हारे निश्चित तौर पर अनशन एक विश्वास है जिसे आत्म त्याग से बल मिलता है और धर्म में पीड़ा मनुष्य को ईश्वर के करीब ले जाती है।

गांधी के लिए राजनीति, आध्यात्मिकता से रहित नहीं थीं। ''मेरी प्रार्थना ने मुझे सिखाया कि जब भी कभी परेशानी हो जिसे खत्म नहीं किया जा सके, अनशन और प्रार्थना करनी चाहिए,'' उनकी प्रार्थनाओं ने देश को उपनिवेशवाद से मुक्ति

दिलाई।

गांधी जी विश्व पुरूष थे, और उनका दर्शन विश्वव्यापी। सत्याग्रह और अहिंसात्मक आन्दोलन विश्व शान्ति के लिए अचूक साधन हैं। गांधी जी के इन आदर्शों को पश्चिमी देशों एवं विश्व के अन्य देशों में शांति कार्यकर्ताओं, पर्यावरण समूहों और नारीवादी समर्थकों ने अपनाया। अहिंसक सविनय अवज्ञा आन्दोलन की उनकी तकनीक को मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने पूरे अमेरिका में अश्वेतों को रंगभेद के खिलाफ लड़ने के लिए जागरूक बनााया और शांतिपूर्वक नागरिक अधिकार के लिए आन्दोलन चलाया। दिवगंत नेल्सन मंडेला का शान्ति और अहिंसात्मक परिर्वतन में असीम योगदान है, उनकी मान्यता थी कि अहिंसा और सत्याग्रह हमेशा मानव प्रजाति के प्रति किए गए अपराध को पराजित करती है। वर्तमान में दलाईलामा परोपकारिता के सही मूल्यों के साथ प्रेम संवेदना तथा अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। चेकोस्लोवाकिया भी सफल अहिंसक क्रान्ति के लिए जाना जाता है। वहाँ के शिक्षक राजनेता वैकलव हैवेल ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए शांतिपूर्ण जन–आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होने कहा कि गांधीजी हमारे लिए गर्व करने लायक व्यक्ति हैं।[18]

एक अन्य अहिंसात्मक आन्दोलन पोलैण्ड में लेक बलेसा के नेतृत्व में हुआ जो साम्यवादी शासन की तानाशाही के विरूद्ध आजादी का प्रतीक था। लेक वलेसा ने कहा ''जटिल से जटिल समस्या का समाधान संवाद के जरिए हो सकता है, युद्ध से नहीं। विश्व विख्यात बौद्ध चिन्तक और निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री सेमदोंग रिनपोचे भी महात्मा गांधी के विचार को अपने जीवन में अपनाते हुए कहा कि गांधी हर काल के लिए प्रांसगिक बने रहेंगे। और हिन्द स्वराज को सहमत और असहमत दोनो परिस्थितियों में पढ़ा जाना चाहिए। वे आधुनिक सभ्यता को चुनौती देने वाले पहले व्यक्ति थे।

इसी प्रकार डॉ0 दायसाकु आउकेडा ने गांधी मार्ग के विरासत के चार आयामों पर बल दिया, वे हैं – आशावादिता, कार्यशीलता, प्रचारवाद, तथा व्यापक दृष्टिकोण। इन्होंने गांधीमार्ग की वकालत करते हुए कहा कि ''जो काम पैसा और सत्ता नहीं कर सकता है उससे बड़ा काम विनय पूर्वक सत्याग्रह एवं अहिंसक आन्दोलन कर सकता है।''

यूरोप के पर्यावरण आन्दोलन की विश्वविख्यात नायिका पेट्रा केली के योगदान से समूचा विश्व परिचित है, जर्मनी में शुरू हुए ग्रीन मूवमेन्ट ने यूरोप के कई देशों में असरदार भूमिका निभायी। पर्यावरण से लेकर स्त्रियों के विरूद्ध अन्यायों तक हर मोर्चे पर ग्रीन पार्टी ने पारंपरिक सोच को चुनौती दी। पेट्रा केली गांधीवादी विचारों से प्रेरित थी। यही नहीं सविनय अवज्ञा पर सैद्धान्तिक सूत्रीकरण गांधीजी द्वारा निर्मित ढ़ांचे के अन्दर की गई। इसका अच्छा उदाहरण जॉन रॉल्स की पुस्तक ए थ्योरी ऑफ जस्टिस (1971) है। जो न्याय के संबंध में लिखी गई सबसे भरोसेमन्द संरचना है।[19]

गांधी जी ने भारतीयों को अपनी विरासत, परम्परा और अपने रीति–रिवाजों से अच्छी–अच्छी बाते स्वीकार करने और प्रगति और नैतिक विकास में बाधक बातों को स्वीकार न करने के लिए तैयार किया। उन्होंने पश्चिम के माध्यम से पूर्व की पुनः खोज की। उन्होंने पश्चिमी अनुभव से वे सभी चीजें ग्रहण की जो उपयोगी थी और सादर उन्हें स्वदेशी परम्परा के साथ मिलाकर उनका प्रयोग किया। गांधी जी सार्वभौमिकता की आज की आवश्यकता से परिचित थे और उसके अग्रदूत थे। गहरे अर्थ में गांधी जी बहुसंस्कृतिवाद तथा संस्कृतियों के साथ रचनात्मक संवाद के पहले सिद्धान्तकार और साधक थे।

पिछले कुछ दशकों में पर्यावरणीय आन्दोलनों ने दुनिया को गांधीवादी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। ई0एफ0 शूमाकर ने सार्वजनिक जीवन को आध्यात्मिक आयाम देने का प्रयास किया है। उनकी पर्यावरण सम्बन्धी अवधारणा आध्यात्मिक है और सार्वजनिक जीवन में पर्यावरणवाद का जिस प्रकार प्रतिपादन करते हैं, उसमें गांधीवादी सोच ही है।[20] आज जिस प्रकार पर्यावरण की अवनति हुई उसका कारण उत्पादन एवं उपभोग का असंतुलन है। गांधीमार्गियों ने बहुत पहले मानव समाज के वर्तमान प्रारूप का पूर्वानुमान कर लिया तथा मानव सभ्यता के विकास के लिए उसे सात सामाजिक दोषों से दूर रहने को कहा था। सात दोष क्रमशः इस प्रकार हैं। 1. सिद्धान्तहीन राजनीति 2. विवेकहीन सुख 3. श्रमहीन सम्पति 4. चरित्रहीन ज्ञान 5. नीतिहीन व्यापार 6. दयाहीन विज्ञान 7. व्यागहीन पूजा।

आज विश्व के समक्ष दोहरा संकट विद्यमान है, एक तरफ पर्यावरण संकट का तो दूसरी तरफ माननीय मूल्यो में गिरावट एवं स्थानीय संस्कृति एवं पहचान के खतरे का है। आज जो परिदृश्य सामने आ रहे हैं, उनका सामना गांधी मार्ग के जरिए संभव है क्योंकि बीसवीं सदी ने यह साबित किया है कि यह निरपेक्ष नही सापेक्ष सच्चाई का विश्व है, जहाँ अहिंसात्मक तरीका शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना विकसित करने में अधिक कारगर एवं सार्थक है। मानव समाज ने प्राकृतिक संसाधनों का जिस तीव्र गति से उपयोग किया है, उतनी ही अधिक रफ्तार से कई तरह के प्रदूषणों को बढ़ाया है। वह प्राकृतिक नियम के अनुसार मानव तथा प्रकृति के बीच की संतुलन रेखा से आगे बढ़ चुका है। अब समय आ गया है कि हम इस असंतुलन की स्थिति को समझें और तत्काल प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से बचें अन्यथा हमें भविष्य में खाद्य सामग्री

तक की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

दूसरी तरफ कुछ विचारकों तथा सामाजिक विश्लेषकों ने हमारा ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है कि वर्तमान समाज में मानवीय मूल्यों का काफी ह्रास हुआ है। आज समस्त विश्व में नैतिक मूल्यों का बिखरना चिंता का मूल विषय है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा हमारे परम्परागत मूल्यों को नई व्यवस्थाओं के द्वारा परिवर्तित कर दिया गया है। जहाँ मानव जाति में अधिकाधिक पा लेने की लालसा तथा किसी भी कीमत पर अपने उचित–अनुचित लक्ष्यों की प्राप्ति आम बात बन चुकी है। इन सबके परिणामस्वरूप रूपया सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य बन चुका है। ''बापू बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रूपैया'' का मुहावरा रोजमर्रा के जीवन में चरितार्थ होता दिखाई पड़ रहा है। इसी क्रम में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने बाजारी ताकतों को समय से पहले निर्विघ्न आवा–जाही की छूट देकर एक नए सामाजिक परिवर्तन का द्वार खोल दिया है। इसने न सिर्फ व्यक्ति की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को ही बढ़ाया है, बल्कि उनके आचरण–व्यवहार तथा जीवन शैली में भी आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गांधी का सत्याग्रह एवं अहिंसात्मक तरीका साम्राज्य विरोधी राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिशीलता के लिए मात्र नीति का पहलू भर नहीं है, बल्कि यह ''सभ्यतामूलक रूपान्तरण'' जैसी व्यापक वैश्विक और मानवीय मूल्यों के दायरे को विस्तृत करने वाली वस्तु भी है। इसीलिए वैश्वीकरण के इस युग में गांधी मार्ग की प्रासंगिकता अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि समस्त विश्व समुदाय अन्याय, असमानता और दमन जैसी समस्याओं से बाहर निकलने के लिए प्रयासरत हैं।

सन्दर्भ –

1. जॉन बेलरी बडुरेंट कॉनक्यूस्ट ऑफ वायलॉस प्रिस्टन यूनिवर्सिटी, पृ0 7
2. सेतिया, सुभाष, गांधी जी आज भी प्रासंगिक है, योजना, जनवरी, 2013, पृ0 66–67
3. कोठारी रजनी, राजनीति के किताब, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ0 45
4. जनसत्ता, रविवारी, 24 मई 2009
5. कुमारप्पा, जे.सी., दी नान–वाइलेंट इकानामी एंड वर्ल्ड पीस, काशीः राजघाट, 1958, पृ0 27
6. वही, पृ0 31
7. हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद, 2006, पृ0 25
8. वही, पृ0 32
9. वुडकॉक, जी, गाँधी, लंदन फोनटोना, 1972, पृ0 31
10. ब्राउन, जे. एम. गांधी एंड सिविल डिसओबिडेन्स, कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977, पृ0 87
11. प्यारेलाल, दी डिसकवरी ऑफ सत्याग्रह, बुम्बईः सेवक प्रकाशन, 1980, पृ0 56
12. कुमार, आनन्द, सत्याग्रह शताब्दी अन्तर्राश्ट्रीय समागम, नई दिल्ली, सी.एस.आर., 2006 पृ0 15–16
13. गुहा रामचंद्र, गांधी भारत के पहले, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 2013, पृ0 600
14. स्टैनली वोलपर्ट का आलेख , प्रेम का देवदूत, इण्डिया टूडे, 27 सितम्बर 2017 पृ0 17
15. इण्डिया टूडे, नई दिल्ली, 22 अप्रैल 2008, पृ0 17
16. कुमार, कुलदीप, गांधी और आज, आउटलुक, 21 अक्टूबर 2019, पृ0 54
17. वही, पृ0 55
18. सिंह सविता, ग्लोबल कनर्स विद इनवायरमेंटल क्राइसिस एंड गांधीज विजन, दिल्ली : ए पी एच पब्लिकेंशस, 1999
19. गांधी, एम0के0, कन्सट्रक्टीड प्रोग्राम : इट्स मिनिंग एंड प्लेस, अहमदाबाद : नवजीवन पब्लिशिंग प्रेस, 1941, पृ0 74
20. पारेख, भिखू, स्थायी विरासत, इंडिया टूडे, 9 अक्टूबर 2019, पृ0 16